'चित्' की अवधारणा पर प्रकाश डालें।

रामानुज के अनुसार 'चित्' ही जीव है। वह देह, मन व इन्द्रियों आदि से भिन्न है तथा वह स्वप्रकाश, आनन्दमय, नित्य, अणु और निर्विकार है। वे कहते है कि चित् ईश्वर का अंग है। वह ज्ञाता होने के साथ ही साथ भोक्ता व कर्ता भी है। ईश्वर के साथ उसका सेव्य-सेवक भाव संबंध है।

चित् या चेतन जीव यद्यपि ईश्वर का विशेषण, प्रकार या गुण है, तथापि वह स्वयं चेतन द्रव्य है। जीव नित्य, जन्म-मरणरहित और अणुरूप है। वह शरीर, प्राण, इन्द्रिय मन, अहङ्कार और बुद्धि से विलक्षण है। वह अपने धर्मभूत ज्ञान का आश्रय है। ज्ञान उसका आवश्यक, अनिवार्य और अपृथक्सिद्ध स्वरूप है; इसी कारण से उसे एक साथ ज्ञानस्वरूप और ज्ञानाश्रय कहा जाता है। वह स्वभाव से आनन्दरूप, परिवर्तनरहित, अविकारी और पूर्ण है। किन्तु अविद्या और कर्म के कारण वह बंधनग्रस्त होकर जन्म-मरण-चक्र में घूमता है। कर्म से उसका सम्बन्ध अनादि है। चित् चेतन द्रव्य है, तत्त्व है; किन्तु वह ईश्वर पर सर्वथा आश्रित है।

रामानुजाचार्य ने चित् या जीवात्मा के तीन प्रकार माने है:— (i) नित्य-मुक्त जीव:— नित्य-मुक्त जीव वह है जो कभी बद्ध नहीं रहे, जो अविद्या, कर्म और प्रकृति से सदा मुक्त है एवं जो वैकुण्ठ में सदा भगवत्-सेवा में रत रहते हैं। ये शेष, गरुड़, विष्वक्सेन आदि हैं।

Scanned with CamScanner